Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भ्रमरगीत काव्य एवं सूरदास

डॉ. बिन्दू परस्ते*

* सहा. प्रा. (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महा., इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – सूरदास हिन्दी के भक्तिकालीन कवियों में एक है। वे कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि है। सूरदास में काव्य और भक्ति का अद्भुत उत्कर्ष दिखाई देता है। सूरसारगर के पदों में मानव मात्र हृदय को भावमग्न कर देने की क्षमता है। वात्सल्य और वियोग श्रंगार के क्षेत्र में वे अन्यतम कवि है। जन्मान्ध सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे। भक्ति और श्रंगार के मणिकांचन संयोग को हम सूरदास के काव्य में देख सकते हैं।

सूरदास सूरसागर में एक भ्रमरगीत प्रसंग आता है। इसके कवि ने निर्गुण और ज्ञान पर सगुण और प्रेम की विजय का उद्घोष अत्यंत हृदयस्पर्शी ढंग से किया है। भ्रमरगीत एक श्रेष्ठ विरह काव्य है जिसमें विरह भौतिक और आध्यात्मिक धरातल पर साथ-साथ चलता है।

सूरदास ने काव्य के माध्यम से कृष्ण की बाल-लीलाओं और क्रीडाओं राधा और कृष्ण के संयोग, श्रृंगार प्रेम और मान-लीलाओं, दान-लीलाओं, अमरगीत के अंतर्गत गोपियों के वियोग, श्रृंगार, कृष्ण के प्रति उनकी बेचैनी मिलन की आकांक्षा में वियोग की सधनता और निर्गुण की तुलना में सगुण भक्ति की महत्ता इत्यादि भावों और उनके काव्य सौंदर्य से परिचित कराता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के मध्यकाल की अपनी अलग महत्व और पहचान है। मध्यकाल को दो भागों में बाँटा गया है। भक्ति काल को संवत् 1375 से 1700 तक माना जाता है। और इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। दूसरी ओर कृष्ण भक्ति शाखा के कवि सूरदास है। कृष्ण के जीवन को आधार बनाकर गीति तत्वों से युक्त, उदार भावों से युक्त रचे गये काव्य जिसमें भक्ति भावना थी कूट-कूट कर भरी है। कृष्ण का जीवन, जीवन की यथार्थ भूमि से जुड़ा है और उसमें जीवन की तमाम, विसंगतियाँ और अंतविरोध भी दिखाई देते है। अत: उनका जीवन मानव को अपने जीवन में निकट दिखाई देती है। सूरदास ने इसी निकटता को अपने काव्य में स्थान दिया है।

तथ्यों के आधार पर सूरदास की जन्मतिथि संवत 1535 मानी जा सकती है। श्री मुशीराम शर्मा एवं द्वारिका प्रसाद के विभिन्न तर्को सूर और अकबर की भेंट की तिथि आदि के आधार पर सूर का संवत् 1628 तक जीवित रहना सिद्ध होता है। इस आधार पर कुछ विद्वान उनकी मृत्यु संवत् 1640 में गोवर्धन के निकट पारमोती ग्राम में मानते है।

कुछ विद्वान सूरदास का जन्म मथा और आगरा के बीच स्थित हनकता नामक ग्राम को मानते है। पर अधिकांश विद्वान चौरासी वैष्णव की वार्ता जो सर्वाधिक प्राकृतिक मानते है। सूरदास जन्मान्ध थे कुछ विद्वानों में मतभेद है।

वल्लाभाचार्य ने सूर को पृष्टि मर्ग दीक्षित किया और कृष्णलीला से अवगत कराया उनसे पदो का संकलन सूरसागर के नाम से जाना जाता है। बल्लाभाचार्य के निधन के बाद स्वामी निट्ठलनाथ कन्टि सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य के सम्प्रदाय ने सर्वक्षवेद कवियों को लेकर उन्होंने संवत् 1602 को अष्टध्याय की स्थापना की।

भ्रमरगीत का शाब्दिक अर्थ है। भ्रमर का गान अथवा गुंजन भ्रमर गीत मात्य परंपरा का मूल एवं आधारभूत ग्रंथ श्रीमद भागवत है। इसमें कृष्ण कथा के अन्य प्रसंगों के साथ सेवा तीसवें अध्याय में भ्रमरगीत का प्रसंग आया है। इसमें भ्रमरगीत का प्रारंभ श्री कृष्ण के गोकुल लीला के स्मरण से होता है। उन्हें बचपन में ग्वाल-बाल सखाओं की याद आती है साथ ही गोपिकाओं की थी। वे अपने मित्र उद्धव को सांत्वना देने के लिए ब्रज भेजते है। ब्रज पहुचने ही उद्धव नंद -यशोदा से मिलते है और अपने उद्गारों से कृष्ण के ब्रम्ह स्वरूप का प्रतिपादन करते है। श्रीकृष्ण के इसी स्वरूप की प्रप्ति के लिये वे ज्ञान का उपदेश नंद -यशोदा को देते है। बाद में गोपिया उन्हें एकांत में ले जाती है। इसी वक्त एव भम्रर उड़ता हुआ वहाँ आ जाता है। गोपियाँ भ्रमर में बहाने श्री कृष्ण के प्रति उलाहने, उपालम्भ प्रांरम कर देती है। इस प्रकार गोपियों का भ्रमर को लक्ष्य करके उपालम्भ करना ही भ्रमर गीत के नाम से पुकारा जाता है।

सूरदास ने श्रीकृष्ण की अन्यान्य लीलाओं की भांति भ्रमरगीत का प्रसंग भी श्रीमद्भागवत से लिया है। हिन्दी में सर्वप्रथम सूर ने ही भ्रमरगीत की रचना की और इन्हीं के कारण भ्रमरगीत की लोकप्रियता थी बहुत अधिक हुई।

सूरदास के आधार पर कहा जा सकता है कि भ्रमरगीत लिखने के पीछे मुख्य उद्देश्य निगुर्ण पर सगुण की विजय एवं ज्ञान पर भक्ति की विजय को प्रमाणित करना था। चूंकि सूरदास के समय में ज्ञान और भक्ति में श्रेष्ठता को लेकर विवाद था। शायद इसी कारण से उन्होने निर्गुण का तर्क और भाव से खंडन करते हुए सगुण का मंडन किया है। ज्ञान के समक्ष भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। सूर का 'भ्रमरगीत वाग्वेदग्धता', वचनवक्रता और उपालंभ का काव्य है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भ्रमरगीत को सूरसागर का सार कहा है – भ्रमरगीत सूरसागर के भीतर का एक सार रत्न है। ब्रजभूमि में बिहार करते, लीला दिखाते श्रीकृष्ण कंस के निमंत्रण पर अवसर पर अक्रूर जी के साथ मथुरा चले जाते है। वहाँ से वापस आने की कोई सम्भावना न पाकर गोपियाँ

उनके लिए संदेश भेजती है। पथिक संदेशों के डर से मथुरा जाने वाले रास्ते पर जाने से घबराने लगते है क्योकि संदेशों के हिसाब बढ़ चले थे।

कुष्ण चाहकर भी गोपियों के प्रति अपने अनुराग को विस्मृत नही कर सकते थे इसी चित्र में उद्धव नामक एक ब्रम्हज्ञानी माहपुरूष को कृष्ण ने गोपियो के प्रति अपने मन की व्यथा बताई तो उन्होने कृष्ण से कहा कि यदि आप कहें तो मैं आज जाकर उन सबको समझा दू कि आपके लिये दुखी न हो, निर्गुण निराकार ब्रम्ह का ध्यान आंरभ करें। भगवान कृष्ण इसकी अनुमति दे देते है और इस संदर्भ में सूरदास ने इस सम्पूर्ण प्रसंग को एक अत्यंत अनूठे काव्य का रूप दिया। जिसमें आदि से अंत तक व्यथा-कथा कही गई है। इस कथा में दो भाग है। एक तो उद्धव के संदेशा देने जाने से पहले की वियोग कथा, जिसमें विरह दशा के प्राय: सभी वर्णन है और दूसरा उद्धव ध्वनित हुई है और इसी में निर्गुण का खण्डन व सगुण का मंडन उभरा है।

'काहे को रोकत मारग सूची
सनेहु मधुप निर्गुण कटक तें रापंथ क्यों रूधौ
कै तुम सिखै पठाए, कृष्णा के कै कही स्यामधन जू धौ।'

गोपियाँ श्रीकृष्ण के पिछले कार्यो का वर्णन करना चाहती है क्योकि उन्हें स्मरण करना अच्छा लगता है। सूरदास जी कहते है कि कृष्ण ब्रज में इसलिए नही आ रहे कि वहाँ पर मुझसे गोपियाँ बहुत सारे काम करायेगी। यदि हर बहुरी गोकुल आए।

सुन री साखी। इमारी करनी समुझी मधुपुरी छाए।
बिनुँ पदत्रान बाहुरी पठवेगी बनहि चरावन गाय।
सुना भवन आनि रोकेंगी चोरत दधि - नवनीत।
पकरि जसोदा पै ते जैहें, नाचति भावति गीत।

गोपियों के विरह का वर्णन करते हुए सूरदास जी कहते है कि यह ब्रज भूमि इन्द्र पर से कामदेव ने जागीर के रूप में ले ली है। सूरदास ने अपने भ्रमरगीत में निर्गुण ब्रम्ह के स्थान पर सगुण ब्रम्ह की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया है। गोपियों और उद्धव के बीच का सारा संवाद प्रेम की प्रतिष्ठा के बहाने सगुण की प्रतिष्ठा का प्रयत्न करना ही रहा है। उद्धव निर्गुण ब्रम्ह में उपासना की बात कहना चाहते है परंतु गोपियाँ उनकी बात को अपने तर्को के समने ठहरने नही देती है। जिस समय उद्धव मथुरा लौटकर वापस जाते है और श्रीकृष्ण को ब्रज के समाचार देते है उस समय के उनमें वचनों द्धारा स्पष्ट रूप से निर्गुण ब्रम्ह के सामने सगुण की प्रतिष्ठा का आध्यान होता है। उद्धव कृष्ण से कहते है-

कहिवे मैं न कहू सक राखी।
बुद्धि विवेक अनुमान आपने सुख आई सो भाखी।
हाँ पचि कहतो एक पहर में, वै छन माहिं अनेक।
हारि मानि उठि चल्यो दीन हैं छाँड़ि आपनी टेंक।

उद्धव के कथन में सर्वत्र ही अपने तर्कों की पराजय का स्वीकर है। इस तरह सूरदास ने अनेक स्थलों पर निर्गुण पर सगुण की विजय का वर्णन किया गया है।

सूरदास कों भ्रमरगीत में ईश्वर की साधना के लिए प्रेममार्ग की महत्ता प्रदर्शित की है। वे गोपियों के माध्यम से यह कहना चाहते हे कि उन्हें तो एकमात्र कृष्ण के साथ बिताये हुए सुख के क्षणों की ही चाह है। उन्हे ऐसा ब्रम्ह नही चाहिये जो उनके साथ रस-क्रीड़ा न कर सके। गोपियाँ भ्रमर को देखकर श्री कृष्ण को उसी के माध्यम से उलाहनें देने लगती है। भ्रमर के माध्यम से, कहीं कृष्णा पर घटाकर कहीं राजा बनने पर और कहीं अपने वंश का अधिक ध्यान रखने पर, उसी तरह की बातों पर गोपियों द्धारा उलाहने दिलाये गये है।

राधा और कृष्ण का पररस्परिक सहज आकर्षण ही धीरे-धीरे प्रेम की तन्मयता में बदल जाता है। एक दिन की बात है कि कृष्ण यमुना तट पर खेलने जाते है

इसी बीच जब वे आने साथियों के साथ खेल-कूद रहे होते है कि उन्हें विशाल नेत्रों वाली तथा अपने गौर-वर्ण शरीर पर नीले वस्त्र धारण किए हुए राधा दिखाई पड़ जाती है- कृष्ण राधा की इस सौन्दर्य छवी आकृति को देखकर सहज आकर्षित होकर अभिभूत हो उठते है, और अनायास ही उनमें नेत्र राधा जी के नेत्रों से मिलन स्थीर हो जाते है।

राधाजी भी कृष्ण जी को देखकर आकृष्ट हो चुकी है। भ्रमरगीत एक उत्कृष्ठ वियोगनुमी का प्रसंग है। वियोग की प्रस्तुति का ढ़ंग सूर को अपना निराला है जिसका कोई दूसरा सकी नही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ. संजू कुमार जैन।
2. अंग्रेजी हिंदी कोश - फादर कामिल बुलके।
3. सुकरात के मुकदमे - डी. डी. कौसाम्बी।
4. सुखनवर - मणिमोहन।

****